अभ्यासवान् भव

नवमकक्षायाः संस्कृतस्य अभ्यासपुस्तकम्

0975

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0975 – अभ्यासवान् भव
कक्षा 9 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-059-4

प्रथम संस्करण
मई 2018 वैशाख 1940

पुनर्मुद्रण
अप्रैल 2019 चैत्र 1941
अक्तूबर 2019 अश्विन 1941
फ़रवरी 2021 माघ 1942

PD ?? RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2018

₹ .....

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ....द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	: *विपिन दिवान*
संपादन सहायक	: ऋषिपाल सिंह
उत्पादन सहायक	: ....

चित्र
यशवन्त के. श्रीवास्तव

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृत-शिक्षणार्थम् आदर्श-पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे माध्यमिकस्तरीयच्छात्राणां संस्कृतव्याकरणस्य अभ्यासार्थं द्वादशाध्यायेषु निर्मितस्य *अभ्यासवान् भव* इति नामधेयस्य अभ्यासपुस्तकस्य संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र अपठितावबोधनेन सह पत्रलेखनम्, अनुच्छेदलेखनम्, रचनानुवादः, वर्णविचारः, कारकोपपदविभक्तिः, प्रत्ययसमासाव्ययप्रयोगाः, शब्दरूपाणि, धातुरूपाणि इति विषयेषु अभ्यासक्रमाः दत्ताः येन छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासो भवेत्। अनेन पुस्तकेन सह छात्राः संस्कृतस्य भाषाप्रयोगे दक्षाः भवेयुः इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुम् अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

नवदेहली
मई, 2018

हृषीकेशः सेनापतिः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

पुस्तक निर्माण समिति

सदस्य

आभा झा, *पी.जी.टी.* संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

जगदीश सेमवाल, *सेवानिवृत्त निदेशक*, वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर

भास्करानन्द पाण्डेय, *सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य,* राजकीय सर्वोदय सह-शिक्षा विद्यालय, पश्चिम विहार नयी दिल्ली

लता अरोड़ा, *सेवानिवृत्त टी.जी.टी.* संस्कृत, केंद्रीय विद्यालय नं. 3, दिल्ली कैण्ट, नयी दिल्ली

विरेन्द्र कुमार, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केंद्रीय विद्यालय नं. 9, फ़रीदाबाद

शंकर झा *टी.जी.टी.* संस्कृत, केंद्रीय विद्यालय नं. 2, फ़रीदाबाद

सरोज गुलाटी, *पी.जी.टी.* संस्कृत, कुलाची हंसराज मॉडल पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली

सरोज पुरी, *टी.जी.टी.* संस्कृत, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली

समन्वयक एवं संपादक

के.सी.त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सहसमन्वयक एवं संपादक

जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पुस्तक निर्माण समिति के सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है। परिषद्, जगदीश चन्द्र काला एवं यासमीन अशरफ, *जे.पी.एफ.* संस्कृत (भाषा शिक्षा विभाग) एवं संपादन के लिए ममता गौड़ *संपादक-संविदा*, आरती, नरेश कुमार *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (प्रकाशन प्रभाग) के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने पाण्डुलिपि के प्रूफ़ संशोधन में विशेष सहयोग किया है। पुस्तक को यथासमय प्रकाशित करने के लिए परिषद् प्रकाशन प्रभाग के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

भूमिका

व्याकरणशास्त्र अनादिकाल से भारतीय चिन्तन का अनिवार्य अङ्ग रहा है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संस्कृत भाषा में लिखित शास्त्रों के सम्यक् अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि व्याकरण भाषा को शुद्ध बनाकर उसका समुचित प्रयोग सिखाता है। व्याकरण शब्द (वि + आ + कृ + ल्युट्) से निष्पन्न है।

व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा: अनेन इति व्याकरणम्

अर्थात् शब्दों की व्युत्पत्ति करने वाले, प्रकृति एवं प्रत्यय का निर्धारण करने वाले तथा उनके शुद्ध स्वरूप का विवेचन करने वाले शास्त्र को व्याकरणशास्त्र कहते हैं। अति प्रचीन काल से शास्त्रों में व्याकरण का प्रमुख स्थान है – मुखं व्याकरणं स्मृतम्। संस्कृत भाषा में व्याकरणशास्त्र का जितना सूक्ष्म, तर्कपूर्ण एवं विस्तृत विवेचन हुआ है उतना विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं हुआ है। वेदों के सम्यक् अध्ययन, अर्थ-बोध तथा वेद-मंत्रों की व्याख्या के लिए वेदाङ्गों का ज्ञान अनिवार्य है। वेदाङ्ग 6 हैं —

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिण:।।

1. शिक्षा, 2. व्याकरण, 3. छन्द, 4. निरुक्त, 5. ज्योतिष, और 6. कल्प।

व्याकरण की सहायता से ही हम वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों के साथ-साथ भास, कालिदास, माघ, श्रीहर्ष, भवभूति, बाण एवं जगन्नाथ प्रभृति विद्वानों की कृतियों का रसास्वादन करते हैं।

व्याकरण ऐसी शक्ति प्रदान करता है जिसके द्वारा सारे श्रुत और अश्रुत शब्दों तथा पठित और अपठित वाङ्मय का रहस्य अल्पकाल में ही समझा जा सकता है। शब्दों का असन्दिग्ध ज्ञान व्याकरण से ही सम्भव है। धनवान् शब्द शुद्ध है या धनमान्, बुद्धिमती शब्द शुद्ध है या बुद्धिवती। इस प्रकार के सन्देह को वैयाकरण ही दूर कर सकता है।

संस्कृत व्याकरण की परम्परा

संस्कृत व्याकरण की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितनी वैदिक संहिता। तैत्तिरीय संहिता में उल्लेख है कि इन्द्र ने संस्कृत भाषा का प्रथम व्याकरण रचा। पतञ्जलि के महाभाष्य में संकेत मिलता है कि इन्द्र के पहले भी व्याकरणशास्त्र का अस्तित्व था। इन्द्र ने बृहस्पति से व्याकरण-विद्या का अध्ययन किया था—

"बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच।"

ऐन्द्र व्याकरण की अविच्छिन्न परम्परा का उल्लेख ऋक्तन्त्र में भी सुलभ है —

ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय, भरद्वाज ऋषिभ्य:, ऋषय: ब्राह्मणेभ्यश्च।

इससे प्रतीत होता है कि ऐन्द्र सम्प्रदाय व्याकरण का एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय था। इसके समकक्ष व्याकरणशास्त्र का एक दूसरा माहेश्वर-सम्प्रदाय भी था जिसके प्रवर्तक महेश्वर थे जिसकी आधारशिला पर पाणिनि ने व्याकरण के भव्य प्रासाद का निर्माण किया।

पाणिनि ने *अष्टाध्यायी* में आपिशलि, काशकृत्स्न, शाकल्य, स्फोटायन एवं शाकटायन आदि दस वैयाकरणों का नामोल्लेख किया है। इन्होंने अपने से पूर्ववर्ती सभी वैयाकरणों के ग्राह्य-विचारों और विवेचनों से परिपूर्ण-तत्त्वों को अपने ग्रन्थ में अपनाया है।

पाणिनि परम्परा के द्वितीय वैयाकरण *कात्यायन* हैं, जिन्हें *वररुचि* भी कहा जाता है। ये दाक्षिणात्य थे। इन्होंने पाणिनि द्वारा रचित लगभग 1250 सूत्रों पर आलोचनात्मक टिप्पणी दी है, जो *वार्तिक* के नाम से प्रसिद्ध हैं। वार्तिकों की संख्या प्राय: चार हज़ार है।

पाणिनि की व्याकरण परम्परा का परिवर्तन एवं परिवर्धन करने वाले महान् वैयाकरण पतञ्जलि हैं। इनका समय दूसरी शताब्दी ई.पू. है। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ *महाभाष्य* है।

व्याकरणशास्त्र में पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि को *त्रिमुनि* (मुनित्रय) संज्ञा से अभिहित किया गया है।

प्रक्रिया ग्रन्थ

टीकाओं और उपटीकाओं के बाद पाणिनीय सूत्रों की नवीन पद्धति की ओर वैयाकरणों का ध्यान आकर्षित हुआ। *धर्मकीर्ति ने रूपावतार* ग्रन्थ लिखा, जिसमें अष्टाध्यायी के सूत्रों को विभिन्न प्रकरणों में विभक्त कर सम्पादित किया गया है। सन् 1350 ई. में विमल सरस्वती ने *रूपमाला* और 1400 ई. में पं. रामचन्द्र ने *प्रक्रिया कौमुदी* नामक ग्रन्थ की रचना की। 1630 ई. के लगभग *भट्टोजिदीक्षित* ने वैयाकरण *सिद्धान्त कौमुदी* की रचना की। इस पर स्वयं *भट्टोजिदीक्षित* ने *प्रौढ़मनोरमा* नाम की टीका लिखी। सिद्धान्त कौमुदी पर नागेशभट्ट ने *लघुशब्देन्दुशेखर* नामक प्रौढ़ ग्रन्थ लिखा। सिद्धान्त कौमुदी की दो अन्य प्रसिद्ध टीकाएँ – *तत्त्वबोधिनी* और *बालमनोरमा* हैं। आचार्य वरदराज ने सिद्धान्तकौमुदी को संक्षिप्त करते हुए *सारसिद्धान्तकौमुदी, लघुसिद्धान्तकौमुदी* एवं *मध्यसिद्धान्तकौमुदी* की रचना की, जो व्याकरण के प्रारम्भिक छात्रों द्वारा क्रमश: व्याकरण अध्ययन के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ हैं।

उपर्युक्त समस्त ग्रन्थ प्राय: व्याकरण के व्युत्पत्ति पक्ष को लक्ष्य में रखकर लिखे गए हैं। व्याकरण के दार्शनिक पक्ष को लेकर लिखे गए ग्रन्थों में – भर्तृहरि का *वाक्यपदीय,* कौण्डभट्ट का *वैयाकरणभूषणसार* तथा नागेशभट्ट की *लघुमञ्जूषा* और *स्फोटवाद* प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

विद्यालयी शिक्षा की रूपरेखा के आलोक में माध्यमिक स्तर के लिए निर्धारित संस्कृत पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर कक्षा नवीं के छात्रों के लिए संस्कृत भाषा के सम्यक् अभ्यास हेतु इस अभ्यास पुस्तक की रचना की गई है। इसमें 12 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में *अपठितावबोधनम्,* द्वितीय में *पत्रम् — (क) अनौपचारिकम् पत्रम्, (ख) औपचारिकम् पत्रम्,* तृतीय में *चित्रवर्णनम्,* चतुर्थ में *संवादानुच्छेदलेखनम्,* पंचम में *रचनानुवाद:,* षष्ठ में *कारकोपपदविभक्ति:,* सप्तम में *सन्धि:,* अष्टम में *उपसर्गाव्ययप्रत्यया:,* नवम में *समासा:,* दशम में *शब्दरूपाणि अकारान्त पुँल्लिङ्गशब्द:,* एकादश अध्याय में *धातुरूपाणि*

एवं द्वादश अध्याय में *वर्णविचार:* दिए गए हैं। पुस्तक के परिशिष्ट 1 में '*फलादीनां नामानि*' तथा परिशिष्ट 2 में '*विलोमपदानि*' एवं '*पर्यायपदानि*' को दिया गया है। इस तरह इस पुस्तक में कक्षा नवम के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप संस्कृत व्याकरण के आधारभूत नियमों का परिचय देते हुए उपयोगी अभ्यासचारिका द्वारा छात्रों में संस्कृत की समझ तथा भाषा प्रयोग को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया गया है।

आशा है यह अभ्यास पुस्तक माध्यमिक स्तर पर नवम कक्षा के छात्रों को संस्कृत भाषा, व्याकरण एवं संस्कृत व्यवहार का अभ्यास कराने में सफल होगी।

शिक्षिता बालिका
शिक्षितः समाजः
सशक्त बालिका
सशक्तः समाजः
स्वस्था बालिका
स्वस्थः समाजः

विषयानुक्रमणिका

पुरोवाक् *iii*

भूमिका *vii*

मङ्गलम् *xii*

1. अपठितावबोधनम् 1
2. पत्रम् 13
   (क) अनौपचारिकम् पत्रम्
   (ख) औपचारिकम् पत्रम्
3. चित्रवर्णनम् 24
4. संवादानुच्छेदलेखनम् 34
5. रचनानुवाद: 46
6. कारकोपपदविभक्ति: 59
7. सन्धि: 86
8. उपसर्गाव्ययप्रत्यया: 92
9. समासा: 109
10. शब्दरूपाणि 113
11. धातुरूपाणि 134
12. वर्णविचार: 138

परिशिष्टम्–1 142

परिशिष्टम्–2 146

मङ्गलम्

अभ्यासं कार्यसिद्ध्यर्थं
नित्यं कुर्वन्ति पण्डिताः।
संसारे सिद्धिमन्त्रोऽयं
तस्मादभ्यासवान्भव।।

कार्य की सिद्धि के लिए समझदार लोग नित्य अभ्यास करते हैं। यह (अभ्यास) संसार में सिद्धि (प्राप्त करने) का मंत्र है। इसलिए (तुम भी) अभ्यास करने वाले बनो।

अभ्यस्यामो वयं विद्यां
यावतीमधिकाधिकाम्।
तावदग्रे जगत्यस्मिन्
सरिष्यामो न संशयः।।

हम विद्या का जितना अधिक से अधिक अभ्यास करते हैं, संसार में उतना ही आगे बढ़ेंगे इसमें संदेह नहीं है।